



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 05 अप्रैल, 2021

H1-B वीजा प्रतर्बिंध

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लागू किये गए वीजा प्रतर्बिंधों का वसितार न करने का फैसला लिया है। बीते वर्ष जून माह में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अधिपति प्रतर्बिंध मुख्य रूप से H1-B वीजा पर केंद्रित थे, साथ ही इन प्रतर्बिंधों का कुछ प्रभाव L-1 वीजा पर भी पड़ा था। राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा लागू किये गए इन प्रतर्बिंधों का प्राथमिक प्रभाव आतथिय उद्योग के श्रमिकों और अध्ययन के साथ-साथ कार्य कर रहे छात्रों पर देखा गया था। राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन और कोरोना वायरस महामारी के बीच राष्ट्रपति ट्रंप ने घोषणा करते हुए H1-B सहित कई अस्थायी या 'गैर-आप्रवासी' वीजा श्रेणियों के आवेदकों का अमेरिका में प्रवेश नलिंबित कर दिया था। राष्ट्रपति ट्रंप ने यह तर्क दिया था कि इन वीजा कार्यक्रमों के कारण अमेरिकी श्रम बाजार पर प्रतर्कूल प्रभाव पड़ रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में रोजगार के इच्छुक लोगों को H1-B वीजा प्राप्त करना आवश्यक होता है। H1-B वीजा वस्तुतः 'इमीग्रेशन एंड नेशनलटि एक्ट' की धारा 101(a) और 15(h) के अंतर्गत संयुक्त राज्य अमेरिका में रोजगार के इच्छुक गैर-आप्रवासी नागरिकों को दिया जाने वाला वीजा है। यह अमेरिकी नयिकताओं को वशिषज्जतापूर्ण व्यवसायों में अस्थायी तौर पर वदिशी कर्मचारियों को नयिकृत करने की अनुमति देता है।

राष्ट्रीय समुद्री दविस

भारत में प्रत्येक वर्ष 5 अप्रैल को 'राष्ट्रीय समुद्री दविस' मनाया जाता है। इस दविस का प्राथमिक उद्देश्य सुरक्षति और पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल अंतर-महाद्वीपीय वाणजिय एवं व्यापार तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में समुद्री पारस्थितिकि तंत्र के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। यह दविस देश के समुद्री कषेत्तर की रक्षा और संरक्षण पर केंद्रित है। ज्ञात हो कि लगभग 100 वर्ष पूर्व 5 अप्रैल, 1919 को पहला भारतीय समुद्री जहाज मुंबई से ब्रिटन की यात्रा पर रवाना हुआ था, उसी की याद में 1964 से प्रत्येक वर्ष 5 अप्रैल को राष्ट्रीय समुद्री दविस मनाया जाता है। इस दविस को मनाने का लक्ष्य आम लोगों को भारतीय जहाजरानी उद्योग की गतिविधियों के साथ-साथ भारत की अर्थव्यवस्था में इसकी अहम भूमिका से रूबरू कराना है। इतिहासकारों की मानें तो भारत के समुद्री इतिहास की शुरुआत तब हुई थी जब तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व सधुि घाटी के लोगों ने मेसोपोटामिया के साथ अपने समुद्री व्यापार की शुरुआत की थी और जब रोमन साम्राज्य द्वारा मसिर का अतकिरण कया गया, तो रोम के साथ भी व्यापार शुरु हो गया। नौवहन महानदिशालय द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के मुताबकि, भारत में दसंबर 2018 तक कुल 43 शपिगि कंपनयि हैं, जिनके पास कुल 1,401 समुद्री जहाज मौजूद हैं।

राष्ट्रीय ड्राइवगि लाइसेंस रजसिटर

डुप्लीकेट ड्राइवगि लाइसेंस को समाप्त करने के उद्देश्य से सड़क परिवहन और राजमारग मंत्रालय ने 31 मार्च से 'राष्ट्रीय ड्राइवगि लाइसेंस रजसिटर' की शुरुआत की है। इस रजसिटर का उद्देश्य डुप्लीकेट ड्राइवगि लाइसेंस और उसके दुरुपयोग को रोकना है, साथ ही इसके माध्यम से ड्राइवगि लाइसेंस में होने वाले सभी परिवर्तन इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से किये जाएंगे। भारत में सड़क दुर्घटनाओं के कारण प्रतर्विष लगभग 1.5 लाख लोगों की मृत्यु होती है, जिनमें से अधिकांश दुर्घटनाओं में ड्राइवर की गलती होती है। यद्यपि राज्यों के अधिकांश ड्राइवगि लाइसेंस पहले से ही राष्ट्रीय सूचना वजिज्ञान केंद्र के 'सारथी' पोर्टल पर मौजूद हैं, इस रजसिटर के प्रभाव में आने पर आगामी कुछ महीनों में सभी राज्य सरकारों के लिये राज्य के सभी पुराने ड्राइवगि लाइसेंस संबंधित डेटा को ऑनलाइन स्थानांतरित करना अनविर्य हो जाएगा।

इनसाइट लैंडर

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के इनसाइट लैंडर ने हाल ही में मंगल ग्रह पर भूकंप के दो झटकों को रिकॉर्ड किया है। क्रमशः 3.3 और 3.1 की तीव्रता के ये भूकंप के झटके 'सरबरस फॉसए' नामक कषेत्तर में महसूस किये गए, जहाँ इससे पूर्व भी भूकंप के दो अन्य झटकों को महसूस किया गया था। ज्ञात हो किये भूकंप के झटके इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मंगल ग्रह पर 'सरबरस फॉसए' भूकंपीय रूप से सक्रिय कषेत्तर है। नासा द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों की मानें तो नवंबर 2018 में जब से इनसाइट लैंडर ने मंगल ग्रह पर लैंड किया है, तब से 500 से अधिक भूकंप के झटकों को रिकॉर्ड किया जा चुका है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी की मानें तो मंगल ग्रह पर पृथ्वी की तरह टेक्टोनिक प्लेट नहीं हैं, कति वहाँ ज्वालामुखी गतिविधियों की दृष्टि से सक्रिय कषेत्तर ज़रूर मौजूद हैं, जो सतह पर कंपन उत्पन्न कर सकते हैं। 'इनसाइट' का पूरा नाम 'इंटीरियर एक्सप्लोरेशन यूजिंग सिसमिक इन्वेस्टिगेशंस जयिडेसी एंड हीट ट्रांसपोर्ट' (InSight) है। इनसाइट लैंडर मशिन मंगल ग्रह की सतह के नीचे वसितृत अध्ययन के लिये समर्पित पहला मशिन है, यह 26 नवंबर, 2018 को मंगल ग्रह की सतह पर उतरा था।

